

**ग्रंथि स्त्री.** (तत्.) 1. गाँठ 2. बंधन 3. मायाजाल 4. कुटिलता, टेढ़ापन 5. एक प्रकार का रोग जो खून बिगड़ जाने के कारण होता है और जिसमें गोल गाँठों की तरह सूजन हो जाती है, ये गाँठें प्रायः पक जाती हैं और चिरवानी पड़ती हैं 6. आलू 7. भद्रमोथा 8. ग्रथापर्जी 9. गुठली 10. ईख, बाँस आदि की गाँठ 11. शरीर के अंगों का जोड़ 12. शरीर के अंदर की वे गाँठें जिनसे एक प्रकार का रस स्राव होता रहता है 13. अंटी 14. गिरह।

**ग्रंथित पुं.** (तत्.) 1. गाँठदार, गंठली, गूँथा हुआ 2. गाँठ दिया हुआ, जिसमें गाँठ लगी हो।

**ग्रंथिल पुं.** (तत्.) गाँठदार, गंठिला।

**ग्रंथिमान पुं.** (तत्.) बंधा हुआ, ग्रंथित।

**ग्रंथी पुं.** (तत्.) 1. अनेक पुस्तकों का अध्येता 2. पुस्तकीय ज्ञानसे संपन्न 3. अनेक ग्रंथ रखनेवाला।

**ग्रंस पुं.** (देश.) 1. कुटिलता 2. छल-कपट 3. दुष्ट, उपद्रवी।

**ग्रथित वि.** (तत्.) 1. एक जगह नत्थी किया हुआ या बंधा हुआ 2. रचित 3. क्रमबद्ध, श्रेणीबद्ध 4. जमा हुआ 5. आहत, क्षत 6. अधिकृत 7. वर्जित 8. गाँठ युक्त।

**ग्रभ पुं.** (अ.) दे. गर्भ।

**ग्रसन पुं.** (तत्.) 1. भक्षण, निगलना 2. पकड़ 3. खाने के लिए पकड़ना, इस प्रकार चंगुल में फँसना जिसमें छूटने न पाए 4. ग्रास 5. एक असुर का नाम 6. ग्रहण 7. दस प्रकार के ग्रहणों में से एक जिसमें चंद्र या सूर्यमंडल पाद, अर्ध या त्रिपाद ग्रस्त हो।

**ग्रसना पुं.** (तत्.) 1. बुरी तरह पकड़ना, इस प्रकार पकड़ना कि छूटे न।

**ग्रसिष्णु पुं.** (तत्.) 1. परमात्मा वि. 1. निगलने या हड़पने वाला 2. जो ग्रसन का अभ्यस्त हो।

**ग्रस्त पुं.** (तत्.) 1. पकड़ा हुआ 2. पीड़ित 3. खाया हुआ 4. आधे उच्चारण किए हुए 5. ग्रहण युक्त।

**ग्रस्ता वि.** (तत्.) ग्रास करने वाला, ग्रसित, पकड़ने वाला।

**ग्रस्तास्त वि.** (तत्.) ग्रहण लगने पर सूर्य या चंद्रमा का बिना मोक्ष हुए अस्त होना।

**ग्रस्ति स्त्री.** (तत्.) ग्रसने की क्रिया।

**ग्रस्तोदय पुं.** (तत्.) चंद्रमा या सूर्य का उस अवस्था में उदय होना जब उन पर ग्रहण लगा हो।

**ग्रस्य वि.** (तत्.) ग्रसने योग्य, खा जाने योग्य।

**ग्रह पुं.** (तत्.) वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्त काल आदि का पता ज्योतिषियों ने लगा लिया था, बुरी तरह तंग करने वाला 2. ग्रहण करने, पकड़ने या वश में करने की क्रिया या भाव 3. वह आकाशस्थ पिंड जो किसी सौर जगत का अंग हो और उस जगत के सूर्य की परिक्रमा करता हो जैसे- पृथ्वी, बुध, शुक्र आदि।

**ग्रहक पुं.** (तत्.) वह जो ग्रहण करने वाला हो, ग्राहक 2. कैदी।

**ग्रहण पुं.** (तत्.) 1. सूर्य, चंद्र या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के मध्य में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आ जाने के कारण उसकी छाया पड़ने से होता है, अथवा उस पिंड और उसे ज्योति पहुँचाने वाले पिंड को मध्य में आ पड़ने वाले किसी अन्य पिंड की छाया पड़ने से होता है जैसे- चंद्र और सूर्य के मध्य में पृथ्वी के आ जाने के कारण चंद्रग्रहण आदि सूर्य तथ पृथ्वी के मध्य में चंद्रमा के आ जाने के कारण सूर्य ग्रहण का होना मुहा. ग्रहण लगना-ग्रहण छूटना 2. पकड़ने लेने या हस्तगत करने की क्रिया 3. स्वीकार 4. अर्थ, तात्पर्य 5. कथन, उल्लेख 6. धारण करना 7. अधिकार 8. ध्वनि ग्रहण 9. हाथ 10. ज्ञानेन्द्रिय 11. कैदी 12. पाणिग्रहण 13. क्रय 14. चयन 15. सेवा 16. प्रशंसापूर्ण उल्लेख।

**ग्रहणांक पुं.** (तत्.) ग्रहण करने वाला।

**ग्रहणांत पुं.** ((तत्.) अध्ययन की समाप्ति।

**ग्रहणि स्त्री.** (तत्.) दे. ग्रहणी।

**ग्रहणी स्त्री.** (तत्.) 1. सुश्रुत के अनुसार उदर में पक्वाशय और आमाशय के बीच एक नाड़ी जो अग्नि या पित्त का प्रधान आधार है इस नाड़ी के दूषित होने से उत्पन्न एक प्रकार का रोग जिसमें खाया हुआ पदार्थ पचता नहीं।

**ग्रहणीय पुं.** (तत्.) ग्रहण करने वाला।